



NCERT Solutions for Class 11 Hindi Core V chapter 02 Rajasthan Ki  
Rajat Bunde

**1. राजस्थान में कुई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है?**

**उत्तर:-** राजस्थान में रेत अथाह होने के कारण वर्षा का पानी रेत में समा जाता है फलस्वरूप नीचे की सतह पर नमी फैल जाती है। यही नमी खड़िया मिट्टी की परत तक रहती है। इस नमी को पानी के रूप में बदलने के लिए चार-पाँच हाथ के व्यास की जगह को तीस से साठ हाथ की गहराई तक खोदा जाता है। खुदाई के साथ चिनाई भी की जाती है। इस चिनाई के बाद खड़िया की पट्टी पर रिस-रिस कर पानी एकत्र हो जाता है। इसी तंग गहरी जगह को कुई कहा जाता है। कुई केवल व्यास में कुएँ के व्यास में छोटी होती है। गहराई में ये कुएँ जितनी ही होती है।

**2. दिनोदिन बढ़ती पानी की समस्या से निपटने में यह पाठ आपकी कैसे मदद कर सकता है तथा देश के अन्य राज्यों में इसके लिए क्या उपाय हो रहे हैं? जानें और लिखें?**

**उत्तर:-** दिनोदिन पानी की समस्या विकराल रूप ले रही है। मानव की प्रकृति के अत्यधिक दोहन के कारण पानी की समस्या भयंकर होती जा रही है। नदियों का जल-स्तर घटता जा रहा है। सभी जगहों में लोग पानी की कमी से जूझ रहे हैं। ऐसे वातावरण में राजस्थान की रजत बूंदें पाठ से हमें जल प्राप्ति के अन्य उपायों और पानी के समुचित प्रयोग पर विचार करने में मदद करता है।

देश के अन्य भागों में पानी की समस्या से निपटने के लिए कई सरकारी और गैर सरकारी अभियान चलाए जा रहे हैं। लोगों को प्रिंट मिडिया, विज्ञापन, कार्यक्रमों, सिने जगत की हस्तियों द्वारा पानी के विषय में अवगत कराया जा रहा है। वर्षा के पानी के बचाव के कई उपाय गाँवों और शहरों में किए जा रहे हैं। गाँवों में तालाबों का पुनर्निर्माण किया जा रहा है। छोटे कुएँ, बावडियों और जलाशयों का निर्माण कर पानी के भूमिगत

जल-स्तर को बढ़ाया जा रहा है।

**3. चेजारों के साथ गाँव-समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज क्या फ़र्क आया है पाठ के आधार पर बताइए?**

**उत्तर:-** चेजारों कुँई निर्माण के दक्ष चिनाई करने वाले कारीगर को कहा जाता है। राजस्थान में पहले चेजारों को विशेष दर्जा प्राप्त था चेजारों को विदाई के समय तरह-तरह की भेंट दी जाती थी। कुँई के बाद भी इनका रिश्ता गाँव से बना रहता था उन्हें तीज, त्योहारों तथा शादी-विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर भी भेंट दी जाती थी। फसल आने पर खलिहान में उनके नाम से अनाज का एक ढेर अलग से रखा जाता था। समयानुसार अब स्थिति में परिवर्तन आ चुका है आज उन्हें पहले जैसा सम्मान नहीं दिया जाता सिर्फ़ मजदूरी देकर काम करवाया जाता है।

**4. निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुँईयों पर ग्राम समाज का अंकुश लगा रहता है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा?**

**उत्तर:-** लेखक के अनुसार राजस्थान के लोग जानते हैं कि भूमि के अन्दर मौजूद नमी को ही कुँई के द्वारा पानी के रूप में प्राप्त किया जाता है। जितनी ज्यादा कुँई का निर्माण होगा उतना पानी की नमी का बाँटवारा भी होगा। इससे कुँई की पानी एकत्र करने की क्षमता पर असर पड़ेगा। इसी कारण ग्राम समाज में निजी होते हुए भी कुँईयाँ सार्वजनिक हो जाती है इसलिए इसके निर्माण में ग्राम समाज का अंकुश बना रहता है।

**5. कुई निर्माण से संबंधित निम्न शब्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करें – पालरपानी, पातालपानी, रेजाणीपानी।**

**उत्तर:-** राजस्थान में पानी के तीन रूप माने जाते हैं –

- 1. पालर पानी** – पालर पानी का अर्थ है – बरसात का सीधे रूप में मिलने वाला जल। वर्षा का यह जल जो बहकर नदी तालाब आदि में एकत्रित हो जाता है।
- 2. पाताल पानी** – वर्षा जल जमीन में नीचे धँसकर ‘भूजल’ बन जाता है। वह कुओं/ट्यूबवेल आदि द्वारा हमें प्राप्त होता है।
- 3. रेजाणी पानी** – वह वर्षा जल जो रेत के नीचे जाता तो है, परन्तु खड़िया मिट्टी के परत के कारण भूजल से नहीं मिल पाता व नमी के रूप में रेत में समा जाता है, जो कुई द्वारा प्राप्त किया जाता है।

\*\*\*\*\* END \*\*\*\*\*